Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

1

"Buddha: The causes of suffering."
(बुद्ध: दु:ख का कारण)

जीवन के हर पहलू में दु:ख की व्यापकता प्रतिबिम्बित होती है। दु:ख के अस्तित्व को स्वीकार कर प्रत्येक भारतीय दार्शनिक ने दु:ख के कारण को जानने का प्रयास किया है।

महात्मा बुद्ध भी इन्हीं में से एक हैं उन्होंने भी इस संसार को दु:खमय माना है एवं दु:ख के संबंध में जितने भी प्रश्न हैं उनका उत्तर जानने के लिए सभी मानव को प्रेरित किया है। बुद्ध के अनुसार दर्शन का उद्देश्य ही है 'दु:ख का अन्त करना।' बुद्ध के सारे उपदेश 'चार आर्यसत्यों' में सन्निहित हैं। 'प्रथम आर्यसत्य' में उन्होंने इस संसार को दु:ख से परिपूर्ण माना है। दु:ख के कारण का विश्लेषण उन्होंने दूसरे आर्य सत्य में एक सिद्धान्त के सहारे किया है। इस सिद्धान्त को संस्कृत में 'प्रतीत्यसमुत्पाद' (The doctrin of Dependent Origination) कहा जाता है। यह सिद्धान्त कार्य-कारण सिद्धान्त पर आधारित है।

'प्रतीत्य समुत्पाद' के अनुसार संसार का कोई भी विषय बिना कारण नहीं है। क्योंकि कुछ न कुछ कारण हैं। अत: जबतक कुछ कारण नहीं रहे तबतक दु:ख की उत्पत्ति हो ही नहीं सकती। बौद्ध दर्शन में दु:ख को 'जरामरण' कहा गया है।

जरा का अर्थ है वृद्धावस्था और मरण का अर्थ 'मृत्यु' होता है। फिर भी जरामरण संसार के समस्त दुःख जैसे रोग, निराशा, शोक, उदासी इत्यादि का प्रतीक है।

'जरामरण' का कारण बुद्ध के अनुसार 'जाति' (Rebirth) है। जन्म ग्रहण करना ही जाति कहा जाता है। जाति ही दुःख का कारण है। 'प्रतीत्य-समुत्पाद' के अनुसार जाति का कारण 'भव' है। जन्मग्रहण करने की प्रवृत्ति को 'भव' (To tendency to be born) कहा जाता है। 'भव का कारण 'उपादान' (Mental clinging) है। सांसारिक वस्तुओं से आसक्त रहने की चाह को 'उपादान' कहा जाता है। इस उपादान का कारण तृष्णा (craving) है। शब्द, स्पर्श, रंग इत्यादि विषयों के भोग की वासना को तृष्णा कहा जाता है। तृष्णा का कारण वेदना (sense experience) है। पूर्व इन्द्रियानुभूति को वेदना कहा जाता है। वेदना का कारण स्पर्श है। इन्द्रियों का वस्तुओं के साथ जो सम्पर्क होता है उसे स्पर्श कहा जाता है। स्पर्श का कारण षडायतन (six sense organs) है। पाँच इन्द्रियों तथा मन के समूह को 'षडायतन' कहा जाता है। ये छः इन्द्रियाँ ही विषयों के साथ सम्पर्क ग्रहण करती हैं। यदि ये इन्द्रियाँ नहीं होती तो स्पर्श कैसे होता?

'षडायतन' का कारण 'नामरूप' है। 'मन और शरीर के समूह को 'नामरूप' कहा जाता है।

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

'नामरूप' का कारण 'विज्ञान' है। जब नवजात शिशु माँ के गर्भ में रहता है तब विज्ञान के कारण ही नवजात शिशु का शरीर एवं मन विकसित होता है। विज्ञान का कारण 'संस्कार' है। पूर्वजन्म की प्रवृति को संस्कार कहा जाता है। 'संस्कार' का कारण 'अविद्या' है। अवास्तविक वस्तुओं को वास्तविक समझना ही अविद्या है। 'अविद्या' ही समस्त दुःखों का मूल कारण है। क्योंकि कार्य-कारण की अविद्या पर आकर ही रुक जाती है। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, शांकर और जैन इत्यादि दर्शनों में भी दुःख का मूल कारण 'अविद्या' को ही ठहराया गया है।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है कि (1) दुःख का कारण (2) जाति है। जाति का कारण (3) 'भव' है। 'भव' का कारण (4) 'उपादान' है। उपादान का कारण (5) तृष्णा है। तृष्णा का कारण (6) वेदना है। वेदना का कारण (7) स्पर्श है। स्पर्श का कारण (8) षडायतन है। षडायतन का कारण (9) नामरूप है, नामरूप का कारण (10) 'विज्ञान', विज्ञान का कारण (11) संस्कार है। संस्कार का कारण (12) अविद्या है। इस प्रकार शृंखला में बारह कड़ियाँ है

जिसमें [redacted], 'जरामरण' प्रथम कड़ी है। 'अविद्या' अन्तिम कड़ी है। शेष कड़ियों का स्थान मध्य में आता है। इस श्रृंखला के कई नाम हैं। जैसे 'द्वादश निदान', 'भावचक्र' इत्यादि।

और 'द्वादश निदान' भूत वर्तमान और भविष्यत जीवन में व्याप्त है। वर्तमान जीवन का कारण अतीत जीवन है और वर्तमान जीवन का प्रभाव भविष्य जीवन में पड़ता है। भूत वर्तमान और भविष्य जीवन की दृष्टि से जो तीन भेद किये गये हैं वे अनेक हैं :—

1. अविद्या
2. संस्कार } भूत जीवन

3. विज्ञान
4. नाम-रूप
5. षडायतन
6. स्पर्श
7. वेदना
8. तृष्णा
9. उपादान } वर्तमान जीवन

10. भव
11. जाति
12. जरा-मरण } भविष्य जीवन

प्रतीत्यसमुत्पाद के विरुद्ध अनेक आक्षेप उपस्थित किये गये हैं जिनमें दो प्रमुख हैं।

1. यह बुद्ध की मौलिक देन कहा जाता है परन्तु आलोचकों का कहना है कि दुःखों के कारण

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

का सिद्धान्त बुद्ध की निजि देन न होकर उपनिषद दर्शन के ब्रह्म चक्र की नकल है। अतः प्रतीत्य-समुत्पाद सिद्धान्त को लेकर बुद्ध मौलिकता का दावा करने में असफल प्रतीत होते हैं।

इसकी दूसरी खामियाँ ये हैं कि प्रत्येक निदान का कारण है तब अविद्या का कारण क्या है? बुद्ध दर्शन में इसका उत्तर हम नहीं पाते हैं। बुद्ध ने अविद्या का कारण शायद निरर्थक समझकर नहीं बतलाया, परन्तु कुछ भी हो बुद्ध का मौन चोनो दार्शनिक दृष्टिकोण से असामान्य प्रतीत होता है। इन आलोचनाओं से यह निष्कर्ष निकालना कि प्रतीत्य-समुत्पाद महत्वहीन है सर्वथा अनुचित होगा। इस सिद्धान्त का बुद्ध के दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान है। उनका सारा दर्शन इस सिद्धान्त से प्रभावित है।

प्रतीत्य समुत्पाद में सर्वप्रथम कर्मवाद की स्थापना होती है। कर्मवाद में भी इसी बात को मान्यता दी जाती है।

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त बौद्ध-दर्शन में अनात्मवाद (The theory of no self) की स्थापना करने में सहायक होता है। जब विश्व की प्रत्येक वस्तु क्षणिक है। तब

चिरस्थायी सत्ता के रूप में आत्मा को मानना भूल है। अतः प्रतीत्य समुत्पाद को बौद्ध दर्शन का केन्द्र बिन्दु कहना अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता है। इस प्रकार महात्मा बुद्ध ने दुःख के अस्तित्व को स्वीकार कर उसके कारणों के बारे में बताया है।